चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	14-11-26	3	3-5

पंजाब केसरी

हरियाणा में नम उपार्द्र क्षेत्र के तौर पर 'चौथे जलवायु क्षेत्र' की पहचान

■हकृवि के हरियाणा कृषि पारिस्थिति के एटलस को मिला कॉपीराइट

हिसार, 13 नवम्बर (राठी): हरियाणा में मौसम में बदलाव देखने को मिल रहे हैं। खासतौर से वर्ष 1988 से 2022 के बीच हरियाणा के जलवायु क्षेत्रों में कई बदलाव देखने को मिले। हरियाणा में पहले केवल 3 जलवायु क्षेत्र माने जाते रहे हैं, लेकिन अब नए शोध में चौथा नम-उपार्द्र क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्रों में अवतरित हो रहा है। यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन का प्रतिबिम्ब है।

इसके अतिरिक्त अध्ययन के अनुसार राज्य में शुष्क क्षेत्र का दायरा घटा है जबकि अर्धशुष्क क्षेत्र का विस्तार हुआ है। अर्धशुष्क क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 1988 में 48.7 प्रतिशत था, जो वर्ष 2024 में बढ़कर 65 प्रतिशत हो गया। यह बदलाव भविष्य में फसलों के चयन और जल व अन्य संसाधनों के प्रबंधन की योजना बनाने में महत्वपूर्ण रहेगा।

इसको लेकर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने हरियाणा कृषि पारिस्थिति का एटलस तैयार किया है जिसे आधिकारिक रूप से कॉपीराइट मिला है। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा तैयार इस एटलस का विमोचन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने किया। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस एटलस में हरियाणा के कृषि और जलवायु क्षेत्रों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।



कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ एटलस तैयार करने वाली टीम व अन्य अधिकारी।

जलवायु के अनुसार फसलों के चयन में मिलेगी मदद

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि यह एटलस मौसम से जुड़े आंकड़ों और खेती की जरूरतों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करेगा। इससे वैज्ञानिक अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार फसलों की किस्मों और पानी के प्रबंधन की बेहतर योजना बना सकेंगे।

एटलस में तापमान, वर्षा, आर्द्रता, वायु, मिट्टी व अन्य मदों के आधार पर कृषि के लिए विभिन्न जलवायु क्षेत्रों की जानकारी दी गई है। इससे वैज्ञानिक व किसान अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार फसलों का चयन व अध्ययन कर सकेंगे और कम संसाधनों में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकेंगे।

4 कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों में बांटा गया हरियाणा

एटलस में हरियाणा को 4 प्रमुख कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों में बांटा गया है। इनमें शुष्क, अर्धशुष्क, शुष्क उपार्द्र व नम उपार्द्र क्षेत्र शामिल हैं। नम उपार्द्र क्षेत्र हरियाणा की पृष्ठभूमि पर उत्तर के पहाड़ी क्षेत्रों पर उपस्थित पाया गया है। एटलस में अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु में आए बदलाव, फसलों की खेती के तरीकों में परिवर्तन, पानी पर निर्भर फसलों और नकदी फसलों व तिलहनों के बढ़ते क्षेत्र तथा पारंपरिक वर्षा आधारित फसलों में आई कमी की जानकारी दी गई है।

यह एटलस किसानों, वैज्ञानिकों, कृषि विस्तार अधिकारियों और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी साबित होगा। मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य ने बताया कि इस एटलस को तैयार करने वाली टीम में डॉ. अनुराग, डॉ. रामनिवास, डॉ. एम.एल. खीचड़, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. चंद्रशेखर तथा डॉ. राजबीर गर्ग शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	15-11-26	4	4-6

हकृवि के हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस को मिला कापीराइट : प्रो. काम्बोज

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस तैयार किया है। इस एटलस को आधिकारिक रूप से कापीराइट मिला है। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा तैयार इस एटलस का विमोचन विश्वविद्यालय के कुलपति ,प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने किया। यह एटलस कुलपति के मार्गदर्शन एवं दिशा-निर्देशन में तैयार किया गया है। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस एटलस में हरियाणा के कृषि और जलवायु क्षेत्रों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। इससे किसानों, वैज्ञानिकों और नीति बनाने वाले लोगों को फसलों के सही चयन, पानी के बेहतर उपयोग और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग जरूरी है। यह एटलस खेती की योजना बनाने, उपजाऊ भूमि को बचाने और कृषि उत्पादन बढ़ाने में उपयोगी साबित होगा। कुलपति ने बताया कि वर्ष 1988 से 2022 के बीच हरियाणा के जलवायु क्षेत्रों में कई बदलाव देखने को मिले हैं। हरियाणा में पहले केवल तीन जलवायु क्षेत्र माने जाते रहे हैं लेकिन अब नए शोध में चौथा नम उपाद्र क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्रों में अवतरित हो रहा है। यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन का प्रतिबिम्ब है। इसके अतिरिक्त अध्ययन के अनुसार, राज्य में शुष्क क्षेत्र का दायरा घटा है, जबकि अर्धशुष्क क्षेत्र का विस्तार हुआ है। अर्धशुष्क क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 1988 में 48.7 प्रतिशत था, जो वर्ष 2024 में बढ़कर 65 प्रतिशत हो गया। इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य, डा. दिनेश तोमर, डा. योगेश जिंदल तथा डा. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।



कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ एटलस तैयार करने वाली टीम व अधिकारी।

जलवायु के अनुसार फसलों के चयन में मिलेगी मदद

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि यह एटलस मौसम से जुड़े आंकड़ों और खेती की जरूरतों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करेगा। इससे वैज्ञानिक अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार फसलों की किस्मों और पानी के प्रबंधन की बेहतर योजना बना सकेंगे। उन्होंने बताया कि एटलस में तापमान, वर्षा, आद्रता, वायु, मिट्टी व अन्य मद्दों के आधार पर कृषि के लिए विभिन्न जलवायु क्षेत्रों की जानकारी दी गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	14-11-26	2	6-8

जलवायु परिवर्तन से हरियाणा का बदला कृषि भूगोल, अब चार क्षेत्रों में बंटा प्रदेश

एचएयू के वैज्ञानिकों के हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस को मिला कॉपीराइट

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। जलवायु परिवर्तन ने हरियाणा का कृषि भूगोल बदल दिया है। कभी तीन जलवायु क्षेत्रों में पहचाने जाने वाले प्रदेश में अब चार कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्र सामने आए हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने इसका वैज्ञानिक अध्ययन कर हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस तैयार किया है। इस एटलस को आधिकारिक रूप से कॉपीराइट मिला है।

कृषि मौसम विज्ञान विभाग की ओर से तैयार एटलस का विमोचन कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने किया। उन्होंने बताया कि वर्ष 1988 से 2022 के बीच प्रदेश के जलवायु क्षेत्रों में कई बदलाव दर्ज किए गए हैं। पहले हरियाणा में तीन जलवायु क्षेत्र माने जाते थे लेकिन नए अध्ययन में उत्तर के पहाड़ी क्षेत्रों में नम उपार्द्र क्षेत्र भी सामने आया है। यह जलवायु परिवर्तन का संकेत है।

अध्ययन के अनुसार शुष्क क्षेत्र का दायरा घटा है, जबकि अर्धशुष्क क्षेत्र का विस्तार हुआ है। वर्ष 1988 में अर्धशुष्क क्षेत्र प्रदेश के 48.7 प्रतिशत हिस्से में था। वर्ष 2024 में यह बढ़कर 65 प्रतिशत हो गया। एटलस में हरियाणा को चार प्रमुख कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों में बांटा गया है। इनमें शुष्क, अर्धशुष्क, शुष्क उपार्द्र और नम उपार्द्र क्षेत्र शामिल हैं। इसमें तापमान, वर्षा, आर्द्रता, हवा और मिट्टी सहित विभिन्न मानकों का अध्ययन किया गया है।



कुलपति प्रो. कांबोज के साथ एटलस तैयार करने वाली टीम के सदस्य। स्रोत : एचएयू

इन वैज्ञानिकों ने तैयार किया एटलस

टीम में डॉ. अनुराग, डॉ. रामनिवास, डॉ. एमएल खीचड़, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. चंद्रशेखर और डॉ. राजबीर गर्ग शामिल रहे। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिनेश तोमर, डॉ. योगेश जिंदल और डॉ. जितेंद्र भाटिया मौजूद रहे।

एटलस के अनुसार पानी पर निर्भर फसलों, नकदी फसलों और तिलहनों का क्षेत्र बढ़ा है। वहीं पारंपरिक वर्षा आधारित फसलों का रकबा घटा है। इससे अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार फसलों के चयन में मदद मिलेगी।

फसल चयन और जल प्रबंधन की बनेगी बेहतर योजना : कुलपति प्रो. कांबोज ने कहा कि बढ़ती आबादी की जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग जरूरी है। यह एटलस किसानों, वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं को फसल चयन, जल प्रबंधन और टिकाऊ खेती की योजना बनाने में मदद करेगा। इससे उपजाऊ भूमि का संरक्षण और कृषि उत्पादन बढ़ाने में भी सहायता मिलेगी।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एटलस मौसम संबंधी आंकड़ों और खेती की जरूरतों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी बनेगा। वैज्ञानिक इसके आधार पर अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु के अनुकूल फसल किस्मों और सिंचाई प्रबंधन की योजना बना सकेंगे। किसान भी अपने क्षेत्र के संसाधनों के अनुसार फसल चुनकर कम संसाधनों में बेहतर उत्पादन हासिल कर सकेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	14.11.26	9	1-4

हकृवि ने तैयार किया प्रदेश का कृषि पारिस्थितिकी एटलस, मिला कॉपीराइट

तीन दशक में तीन की जगह बने चार कृषि जलवायु क्षेत्र

- 1988 में 48.7 फीसदी था अर्धशुष्क क्षेत्र, 2024 में बढ़कर 65 फीसदी हुआ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के वैज्ञानिकों ने हरियाणा का कृषि पारिस्थितिकी एटलस तैयार किया है, जिसे भारत सरकार की ओर से आधिकारिक कॉपीराइट प्राप्त हुआ है। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा तैयार किए गए इस महत्वपूर्ण एटलस का विमोचन कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने किया। इस एटलस में पिछले तीन दशकों (1988 से 2022) के दौरान हरियाणा की जलवायु में आए बदलावों का गहन वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।



जलवायु परिवर्तन से बदले कृषि क्षेत्र

कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बताया कि पहले हरियाणा को तीन प्रमुख जलवायु क्षेत्रों में माना जाता था, लेकिन नए अध्ययन में प्रदेश के उत्तरी पहाड़ी हिस्सों में 'नम उपार्द्र' क्षेत्र की पहचान होने के बाद अब चार कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्र (शुष्क, अर्धशुष्क, शुष्क उपार्द्र और नम उपार्द्र) चिह्नित किए गए हैं। अध्ययन के आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश में शुष्क क्षेत्र घटा है, जबकि अर्धशुष्क क्षेत्र का तेजी से विस्तार हुआ है। वर्ष 1988 में प्रदेश के 48.7 प्रतिशत हिस्से में फैला अर्धशुष्क क्षेत्र वर्ष 2024 में बढ़कर 65 प्रतिशत हो गया है। इस एटलस को तैयार करने वाली टीम में डॉ. अनुराग, डॉ. रामनिवास, डॉ. एमएल खीचड़, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. चंद्रशेखर और डॉ. राजबीर गर्ग शामिल रहे। विमोचन के अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिनेश तोमर, डॉ. योगेश जिंदल और डॉ. जितेन्द्र भाटिया भी मौजूद रहे।

किसानों और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी: प्रो. कम्बोज

प्रो. कम्बोज ने कहा कि तापमान, वर्षा, आर्द्रता, वायु और मिट्टी के आधार पर तैयार यह एटलस किसानों, वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं के लिए मील का पत्थर साबित होगा। इसकी मदद से क्षेत्र विशेष की जलवायु के अनुसार फसलों का चयन, जल संरक्षण, उपजाऊ भूमि की सुरक्षा और टिकाऊ खेती की बेहतर योजना बनाई जा सकेगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि यह एटलस मौसम के आंकड़ों और खेती की जरूरतों के बीच एक सेतु का काम करेगा। इसमें पानी पर निर्भर फसलों, नकदी फसलों व तिलहनों के बढ़ते रकबे तथा पारंपरिक वर्षा आधारित फसलों के घटते क्षेत्र का भी विश्लेषण किया गया है, जिससे किसानों को कम संसाधनों में अधिक उत्पादन लेने में मदद मिलेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	14-11-26	7	1-5

हकृवि के हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस को मिला कॉपीराइट : प्रो. काम

हिसार, 13 नवम्बर (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस तैयार किया है। इस एटलस को आधिकारिक रूप से कॉपीराइट मिला है। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा तैयार इस एटलस का विमोचन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने किया। यह एटलस कुलपति के मार्गदर्शन एवं दिशा-निर्देशन में तैयार किया गया है। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस एटलस में हरियाणा के कृषि और जलवायु क्षेत्रों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। इससे किसानों, वैज्ञानिकों और नीति बनाने वाले लोगों को फसलों के सही चयन, पानी के बेहतर उपयोग और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग जरूरी है। यह एटलस खेती की योजना बनाने, उपजाऊ भूमि को बचाने और कृषि उत्पादन बढ़ाने में उपयोगी साबित होगा। कुलपति ने बताया कि वर्ष 1988 से 2022 के बीच हरियाणा के जलवायु क्षेत्रों में कई बदलाव देखने को मिले हैं। हरियाणा में पहले केवल तीन जलवायु क्षेत्र माने जाते रहे हैं लेकिन अब नए शोध में चौथा नम उपार्द्र क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्रों में अवतरित हो रहा है। यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन का प्रतिबिम्ब है। इसके अतिरिक्त अध्ययन के अनुसार, राज्य में शुष्क क्षेत्र का दायरा घटा है, जबकि अर्धशुष्क क्षेत्र का विस्तार हुआ है। अर्धशुष्क क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 1988 में 48.7 प्रतिशत था, जो वर्ष 2024 में बढ़कर 65 प्रतिशत हो गया। यह बदलाव भविष्य में फसलों के चयन और जल व अन्य संसाधनों के प्रबंधन की योजना बनाने में महत्वपूर्ण रहेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि यह एटलस मौसम से जुड़े आंकड़ों और खेती की जरूरतों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करेगा। इससे वैज्ञानिक अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार फसलों की किस्मों और पानी के प्रबंधन की बेहतर योजना बना सकेंगे। उन्होंने बताया कि एटलस में तापमान, वर्षा, आद्रता, वायु, मिट्टी व अन्य मद्दों के आधार पर कृषि के लिए विभिन्न जलवायु क्षेत्रों की जानकारी दी गई है। इससे वैज्ञानिक व किसान अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार फसलों का चयन व अध्ययन कर सकेंगे और कम संसाधनों में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकेंगे। एटलस में हरियाणा को चार प्रमुख कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों में बांटा गया है। इनमें शुष्क, अर्धशुष्क, शुष्क उपार्द्र व नम उपार्द्र क्षेत्र शामिल हैं। नम उपार्द्र क्षेत्र हरियाणा की पृष्ठ भूमि पर उत्तर के पहाड़ी क्षेत्रों पर उपस्थित पाया गया है। एटलस में अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु में आए बदलाव, फसलों की खेती के तरीकों में परिवर्तन, पानी पर निर्भर फसलों और नकदी फसलों व तिलहनों के बढ़ते क्षेत्र तथा पारंपरिक वर्षा आधारित फसलों में आई कमी की जानकारी दी गई है। यह एटलस किसानों, वैज्ञानिकों, कृषि विस्तार अधिकारियों और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी साबित होगा। इस एटलस को तैयार करने वाली टीम में डॉ. अनुराग, डॉ. रामनिवास, डॉ. एम.एल. खीचड़, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. चंद्रशेखर तथा डॉ. राजबीर गर्ग शामिल हैं। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिने डॉ. योगेश जिंदल तथा डॉ भाटिया उपस्थित रहे।



कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ एटलस तैयार करने वाली टीम व अन्य अधिकारी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13.11.26	12	4-6

कृषि में भगवान विश्वकर्मा दिवस के उपलक्ष्य में भंडारे का आयोजन

कुलपति ने भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति का किया अनावरण

हिसार, 12 नवम्बर (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के ट्रांसपोर्ट ऑफिस व फार्म निदेशालय में भगवान विश्वकर्मा दिवस के उपलक्ष्य में भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने सम्पदा कार्यालय में भगवान विश्वकर्मा जी की मूर्ति का अनावरण किया। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि भगवान विश्वकर्मा को सृष्टि का प्रथम शिल्पकार, वास्तुकार और निर्माण कला का देवता माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, उन्होंने देवताओं के लिए अनेक भव्य महलों, भवनों और दिव्य रचनाओं का निर्माण किया था। भगवान विश्वकर्मा का जीवन हमें सृजन, मेहनत, तकनीकी ज्ञान और कुशलता का महत्व समझाता है। उन्होंने कहा कि भगवान विश्वकर्मा की पूजा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह हमें अपने कार्य और जिम्मेदारियों के प्रति ईमानदार, समर्पित और कर्तव्यनिष्ठ रहने की प्रेरणा भी देती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य को पूरी लगन, निष्ठा और गुणवत्ता के साथ करना चाहिए। श्रम का सम्मान, समय का सदुपयोग और कार्य के प्रति समर्पण ही सफलता की असली कुंजी है। कुलपति ने कहा कि किसी भी संस्थान की प्रगति में उसके प्रत्येक कर्मचारी और अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भंडारे में उन्होंने श्रद्धालुओं के साथ प्रसाद ग्रहण किया और उपस्थित लोगों को प्रसाद वितरित किया। भंडारे में विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों और अन्य लोगों ने भाग लिया। सभी ने मिलकर धार्मिक आयोजन में अपनी भागीदारी निभाई।



भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति का अनावरण करते हुए कुलपति प्रो. काम्बोज।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसा
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जागरण	13.11.2026	--	--

हरियाणा में चौथे जलवायु क्षेत्र की हुई पहचान

हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस को मिला कॉपीराइट

हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस तैयार किया है। इस एटलस को आधिकारिक रूप से कॉपीराइट मिला है। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा तैयार इस एटलस का विमोचन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने किया। यह एटलस कुलपति के मार्गदर्शन एवं दिशा-निर्देशन में तैयार किया गया है।

कृषि और जल संरक्षण की योजना बनाने में मिलेगी मदद: कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस एटलस में हरियाणा के कृषि और जलवायु क्षेत्रों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। इससे किसानों, वैज्ञानिकों और नीति बनाने वाले लोगों को फसलों के सही चयन, पानी के बेहतर उपयोग और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग जरूरी है। यह एटलस खेती की योजना बनाने, उपजाऊ भूमि को बचाने और कृषि उत्पादन बढ़ाने में उपयोगी साबित होगा।

हरियाणा के जलवायु क्षेत्रों में आया बदलाव: कुलपति ने बताया कि वर्ष 1988 से 2022 के बीच हरियाणा के जलवायु क्षेत्रों में कई बदलाव देखने को मिले हैं। हरियाणा में पहले केवल तीन जलवायु क्षेत्र माने जाते रहे हैं लेकिन अब नए शोध में चौथा नम उपाद्र क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्रों में अवतरित हो



रहा है। यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन का प्रतिबिम्ब है। इसके अतिरिक्त अध्ययन के अनुसार, राज्य में शुष्क क्षेत्र का दायरा घटा है, जबकि अर्धशुष्क क्षेत्र का विस्तार हुआ है। अर्धशुष्क क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 1988 में 48.7 प्रतिशत था, जो वर्ष 2024 में बढ़कर 65 प्रतिशत हो गया। यह बदलाव भविष्य में फसलों के चयन और जल व अन्य संसाधनों के प्रबंधन की योजना बनाने में महत्वपूर्ण रहेगा।

जलवायु के अनुसार फसलों के चयन में मिलेगी मदद: अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि यह एटलस मौसम से जुड़े आंकड़ों और खेती की जरूरतों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करेगा। इससे वैज्ञानिक अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार फसलों की किस्मों और पानी के प्रबंधन की बेहतर योजना बना सकेंगे। उन्होंने बताया कि एटलस में तापमान, वर्षा, आद्रता, वायु, मिट्टी व अन्य मदों के आधार पर कृषि के लिए विभिन्न जलवायु क्षेत्रों की जानकारी दी गई है। इससे वैज्ञानिक व किसान अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार फसलों का चयन व अध्ययन कर सकेंगे और कम संसाधनों में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकेंगे।

चार कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों में बांटा गया हरियाणा: एटलस में हरियाणा को चार प्रमुख कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों में बांटा गया है। इनमें शुष्क, अर्धशुष्क, शुष्क उपाद्र व नम उपाद्र क्षेत्र शामिल हैं। नम उपाद्र क्षेत्र हरियाणा की पृष्ठ भूमि पर उत्तर के पहाड़ी क्षेत्रों पर उपस्थित पाया गया है। एटलस में अलग-अलग क्षेत्रों की जल
में आए बदलाव, फसलों की
के तरीकों में परिवर्तन, पानी
निर्भर फसलों और नकदी फसलों
तिलहनों के बढ़ते क्षेत्र तथा पारंपरि
वर्षा आधारित फसलों में आई क
की जानकारी दी गई है। यह एटल
किसानों, वैज्ञानिकों, कृषि विस्त
अधिकारियों और नीति निर्माता
के लिए उपयोगी साबित होगा। इ
एटलस को तैयार करने वाली टी
में डॉ. अनुराग, डॉ. रामनिवास, डॉ
एम.एल. खोचड़, डॉ. अनिल कुमार
डॉ. चंद्रशेखर तथा डॉ. राजबी
गर्ग शामिल हैं। इस अवसर पर
ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया
एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ.
दिनेश तोमर, डॉ. योगेश जिंदल तथा
डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	13.11.2026	--	--

हकृवि के हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस को मिला कॉपीराइट : प्रो. कांबोज

हरियाणा में चौथे जलवायु क्षेत्र की हुई पहचान, इससे टिकाऊ खेती में मिलेगी मदद

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने हरियाणा कृषि पारिस्थितिकी एटलस तैयार किया है। इस एटलस को आधिकारिक रूप से कॉपीराइट मिला है। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा तैयार इस एटलस का विमोचन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने किया। इस एटलस को तैयार करने वाली टीम में डॉ. अनुराग, डॉ. रामनिवास, डॉ. एम.एल. खीचड़, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. चंद्रशेखर तथा डॉ. राजबीर गर्ग शामिल हैं।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस एटलस में हरियाणा के कृषि और जलवायु क्षेत्रों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। इससे किसानों, वैज्ञानिकों और नीति बनाने वाले लोगों को फसलों के सही चयन, पानी



के बेहतर उपयोग और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग जरूरी है। यह एटलस खेती की योजना बनाने, उपजाऊ भूमि को बचाने और कृषि उत्पादन बढ़ाने में उपयोगी साबित होगा।

कुलपति ने बताया कि वर्ष 1988 से 2022 के बीच हरियाणा के जलवायु क्षेत्रों में कई बदलाव देखने को मिले हैं। हरियाणा में पहले केवल तीन जलवायु क्षेत्र माने जाते रहे हैं लेकिन अब नए शोध में चौथा नम उपार्द्र क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्रों में अवतरित हो रहा है। यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन का प्रतिबिम्ब है। इसके अतिरिक्त अध्ययन के अनुसार, राज्य में शुष्क क्षेत्र का दायरा घटा है, जबकि अर्धशुष्क क्षेत्र का विस्तार हुआ है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि यह एटलस मौसम से जुड़े आंकड़ों और खेती की जरूरतों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करेगा। इससे वैज्ञानिक अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार फसलों की किस्मों और पानी के प्रबंधन की बेहतर योजना बना सकेंगे। उन्होंने बताया कि एटलस में तापमान, वर्षा, आद्रता, वायु, मिट्टी व अन्य मद्दों के आधार पर कृषि के लिए विभिन्न जलवायु क्षेत्रों की जानकारी दी गई है। इससे वैज्ञानिक व किसान अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार फसलों का चयन व अध्ययन कर सकेंगे और कम संसाधनों में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकेंगे। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. दिनेश तोमर, डॉ. योगेश जिंदल तथा डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।